Literacy for a Billion

Movie: Mausam
Year: 1976

Song: Dil Dhundhata Hai Phir Wohi
Lyricist: Gulzar

दिल ढूँढ़ता है फिर वोही
फ़ुरसत के रात दिन
दिल ढूँढ़ता है फिर वोही
फ़ुरसत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे जानाँ किए हुए

दिल ढूँढ़ता है फिर वोही
फ़ुरसत के रात दिन
दिल ढूँढ़ता है फिर वोही

जाड़ों की नर्म धूप और
आँगन में लेटकर
जाड़ों की नर्म धूप और
आँगन में लेटकर
आँखों पे खींचकर तेरे
दामन के साए को
आँखों पे खींचकर तेरे
दामन के साए को
औंधे पड़े रहें कभी
करवट लिए हुए

दिल ढूँढ़ता है
ओ दिल ढूँढ़ता है फिर वोही
फ़ुरसत के रात दिन
दिल ढूँढ़ता है फिर वोही

या गरमियों की रात जो
पुरवाइयाँ चलें
या गरमियों की रात जो
पुरवाइयाँ चलें
ठंडी सफ़ेद चादरों पे
जागें देर तक
ठंडी सफ़ेद चादरों पे
जागें देर तक
तारों को देखते रहें
छत पर पड़े हुए

दिल ढूँढ़ता है
ओ दिल ढूँढ़ता है फिर वोही
फ़ुरसत के रात दिन
दिल ढूँढ़ता है फिर वोही

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.